ISSN No. 2394-9996

* कवि प्रदीप का काव्यविश्व *

प्रा. डॉ. सय्यद शौकत अली
ज.भ.शि.प्र.मं. द्वारा
संचालित कला एवं विज्ञान
महाविद्यालय पाटोदा, जि. बीड.

कवि की सृष्टि भी बड़ी अजीब होती है। समाज के बीच रहते हैं, सुख - दु:ख की अनुभूति भी उन्हें अन्य जनों की भाँति है, जिसकी संवेदना उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त होती है। सृष्टि समाज के अन्य प्राणी केवल स्वयं में ही खोये रहते है, जब कि रचनाकार समाज, राष्ट्र और विश्व की प्रत्येक घटना पर पैनी दृष्टि रखता है और अपने अनुभव का रस उसमें मिलाकर उसे रसात्मक बना देता हैं। इन्ही अर्थो में कवि विलक्षण होता है। वह न केवल अपने वर्तमान के प्रति सचेत है अपितु अपने इतिहास ओर स्वाभिमानी परम्परा के प्रति भी दायित्व निभाता है। समाज के उत्कर्ष एवं उदात्त स्वरूप को वह इतिहास और साहित्य के रूप में चिरस्मरणीय बना देता है। कवि की सोंच निरन्तर चारू से चारूतर, स्थूल से सूक्ष्म एवं व्यापक होती जाती है। अन्ततः वह समग्र विश्व के कल्याण अर्थात `वसुधैव कुटुम्बकम्` की भावना से ओतप्रोत होता जाता है। यही कारण है कि सम्पूर्ण मानव जाति के बीच साहित्यकार से इतर व्यक्ति जब मर जाता है, तो सदैव ही मिट जाता है, लेकिन साहित्यकार कभी नहीं मरता। उसकी कृतियाँ, उसकी रचनाएँ उसका साहित्य युगों-युगों तक उसे अमर रखता है। आदि कवि वाल्मीकि से लेकर आज तक साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समग्र सृष्टि में जीवित है, अमर है। अपने काव्यात्मक शब्दों के साथ कहना चाहूँगा.....

कोई चलता बटिया-बटिया// कोई लीकों पर चलता है।// कोई चलता आदर्शो पर,// कोई ग्रंथों मे ढलता है,//लेकिन, लीकों को तोड़े जो,//अपने पग-चिन्ह बनाता है,// ऐसे वाणी पुत्र को ही वसुधा पर// युगों - युगों तक याद किया जाता है।

साक्षात ऐसा ही परिचय कवि प्रदीप जी का है। उन्हें पहले भी याद किया जाता था, आज भी याद किया जाता है। आखिर क्यों? क्या इस कवि में? क्या है

इसका परिचय, काव्य शब्द पंक्तियों के माध्यम से कहना चाहूँगा कि कैसा होता है कवि..... कवि भाषा का नहीं, कवि भावों का होता है//कवि मंतव्य का नहीं कवि राहों का होता है।//कवि जीवन का नहीं कवि घावों का होता है, //ये है कवि का परिचय// कवि नभ का नहीं कवि तारों का होता है,//कवि देवों का नहीं अवतारों का होता है,// कवि आलोक का नहीं, अंधकारों का होता है।// ये है कवि का परिचय//कवि अपराध का नहीं, कवि बोध का होता है,//कवि सत्य का नहीं उसकी स्पष्टता का होता है,//कवि प्रलय का नहीं निस्तबधता का होता है।//कवि शोक का नहीं कवि खेदों का होता है।//ये है कवि का परिचय.

देशप्रेम और देश - भक्ति से ओत प्रोत भावनाओं को सुन्दर शब्दों मे पिरोकर जन-जन तक पहुँचाने वाले कवि प्रदीप जी का जन्म 6 फरवरी 1915 को उज्जैन के बडनगढ़ नामक कस्बे में हुआ था। पिता का नाम नारायण भट था। प्रदीपजी की शुरूआती शिक्षा इंदौर में शिवाजी राव हायस्कुल में हुई, जहाँ वे सातवी कक्षा तक पढ़े। इसके बाद की शिक्षा ईलाहाबाद के दरियागंज हायस्कुल में सम्पन्न हुई। इण्टरमिडीयेट की परीक्षा पूरी की। ईलाहाबाद उन दिनों साहित्य का गढ़ हुआ करता करता था वर्ष 1933 से 1935 तक का ईलाहाबाद का काल प्रदीप जी के लिए साहित्यिक दृष्टिकोण से बहुत अच्छा रहा। लखनऊ विश्व विद्यालय से स्नातक की डिग्री हासिल की। कवि प्रदीपजी का वास्तविक नाम रामचन्द्र नारायण द्विवेदी था। किशोरावस्था में उन्हें लेखन और कविता का शौक़ लगा। उनका कविता कहने का अंदाज बड़ा निराला था - जैसे ---

``कभी - कभी खुद से बात करो, कभी खुद से बोल अपनी नज़र में तुम क्या हो? ये मन की तराजू पर तोलो//कभी-कभी खुद से बात करो, कभी-कभी खुद से बोलो// हरदम तुम बैठे ना रहो-शौहरत की इमारत में// कभी-कभी खुद को पेश करो आत्माकी अदालत में// केवल अपनी कीर्ति न देखो कमियों को भी टटोलो// कभी-कभी खुद से बात करो, कभी - कभी खुद से बोलो// दुनिया कहती कीर्ति कमा के, तुम हो बड़े सुखी// मगर तुम्हारे आडम्बर से हम है दुखी// कभी तो अपने श्रण्य-भवन की बंद खिड़कियाँ खोलो// कभी-कभी खुद से बात करो, कभी-कभी खुद से बोलो// ओ नभ में उड़ने वालो जरा धरती पर जाओ।

आपाधापी भरे जीवन में व्यस्त इंसान को स्वयं का परिक्षण करने के लिए कवि प्रदीपजी कह रहे है, इसलिए कि दूसरों का मूल्यांकन करना आसान है। स्वयं का मूल्यांकन स्वयं ही किया जाए तो बेहतर है। कवि सम्मेलनों में वे खूब दाद बटोरा करते थे। कविता तो आमतौर पर हर व्यक्ति जीवन में कभी न कभी करता

ही है, परंतु रामचंद्र द्विवेदी की कविता केवल कुछ क्षणों का शौक या समय बिताने का साधन नहीं थी। वह उनकी साँस-साँस में बसी थी, उनका जीवन थी। इसीलिए अध्यापन छोड़कर वे कविता की सृजन में व्यस्त हो गए।

कवि सम्मेलनों में सूर्यकांत त्रिपाठी `निरालाजी` जैसे महान साहित्यिक को प्रभावित कर सकने की क्षमता थी रामचन्द्र द्विवेदी में उन्ही के आशिर्वाद से रामचंद्र `प्रदीप` कहलाने लगे। प्रदीप नाम के कारण उनके जीवन का एक रोचक प्रसंग है। उन दिनों बम्बई मे कलाकार प्रदीप कुमार भी प्रसिद्ध हो रहे थे तो अक्सर गलिती से डाकिया कवि प्रदीप की चिट्ठी उनके पते पर डाल देता था। डाकिया सही पते पर पत्र दे इस वजह से उन्होने प्रदीप के पहले कवि शब्द जोड़ दिया और यहीं से कवि प्रदीप के नाम से प्रख्यात हुए।

जिस समय कवि प्रदीप की प्रतिभा उत्तरोत्तर मुखर हो रही थी, तब उन्हें तत्कालीन कवि सम्राट पं. गयाप्रसाद शुक्ल का आशिर्वाद प्राप्त हुआ। प्रदीपजी भी उनके सनेही मंडल के अभिन्न अंग बन गये। प्रदीपजी का जीवन बहुरंगी, संघर्षभरा, रोचक तथा प्रेरणादायक रहा। उनके पिता उन्हे शिक्षक बनाना चाहते थे, किंतु तक़दीर में तो कुछ और ही लिखा था. बम्बई की एक छोटी सी कवि गोष्ठी ने उन्हें सिनेजगत का गीतकार बना दिया। उनकी पहली फिल्म थी `कंगन` जो हिट रही। उनके द्वारा `बंधन` फिल्म में रचित गीत `चल - चल रे नौजवान` राष्ट्रीय गीत बन गया। सिंध और पंजाब की विधानसभा ने इस गीत को राष्ट्रीय गीत की मान्यता दी, और ये गीत विधान सभा में गाया जाने लगा। बलराज साहनी उस समय लंदन में थे, उन्होंने इस गीत को लंदन बी.बी.सी. से प्रसारित कर दिया। अहमदाबाद में महादेव भाई ने इसकी तुलना उपनिषद् मंत्र के `चरैवति-चरैवेति` से की। जब भी ये गीत सिनेमा घर में बजता लोग वन्स मोर कहते थे और ये गीत फिर से दिखाना पड़ता था।

देशभक्ति से परिपूर्ण गीत `ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी` बहुत प्रसिद्ध है। कविप्रदीपजी ने 1962 के भारत चीन युद्ध के दौरान शहीद हुए सैनिकों की श्रद्धांजलि मे ये गीत लिखा था। लता मंगेशकर द्वारा गाए इस गीत का तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति में 26 जनवरी 1963 को दिल्ली के रामलीला मैदान में सीधा प्रसारण किया गया। गीत सुनकर जवाहरलाल नेहरू की आँख भर आए थी। कवि प्रदीप ने इस गीत का राजस्व युद्ध विधवा कोष में जमा करने की अपील की थी।

कवि प्रदीप गाँधी विचार धारा के कवि थे। प्रदीपजी ने जीवन मूल्यों की कींमत पर धन-दौलत को कभी महत्व नहीं दिया। कठोर संघर्षो के बावजूद उनके निवास स्थान `पंचामृत` पर सोने के कंगुरे भले ही न मिले परंतु वैश्विक ख्याति का कलश जरूर दिखेगा। प्रदीपजी के लिखे गीत भारत में ही नहीं बल्कि अफ्रिका, यूरोप, और अमेरिका में भी सुने जाते हैं। प्रदीप जी ने कमर्शियल लाइन में रहते हुए कभी अपने गीतों से कोई समझौता नहीं किया। उन्होंने कभी भी कोई अश्लील या हल्के गीत न गाये और लिखे।

कवि प्रदीपजी को अनेकों सम्मानों से सम्मानित किया गया है, 1961 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा महत्वपूर्ण गीतकार घोषित किया गया ये पुरस्कार उन्हे डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा प्रदान किया गया था। किसी गीतकार को राष्ट्रपति द्वारा इस तरह से सम्मान सिर्फ कवि प्रदीपजी को ही मिला है। 1998 में दादासाहेब फालके पुरस्कार से सम्मानित किये गये। मजरूह सुल्तानपुरी के बाद ये दूसरे गीतकार हैं जिन्हे यह पुरस्कार मिला है।

कवि प्रदीपजी स्वतंत्रता आन्दोलनों मे बड़चढ़कर हिस्सा लेते थे। एकबार स्वतंन्त्रता आन्दोलन में उनका पैर फ्रैक्चर हो गया था। इस कारण उन्हे कई दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ा। प्रदीप जी अंग्रेजों के अन्याय, अत्याचार से दुखी थे। उनका मानना था कि यदि आपस में हम लोगों में ईर्ष्या, द्वेश न होता तो हम गुलाम न होते। परम देश भक्त आज़ाद की शहादत पर कवि प्रदीप का मन करूणा से भर गया था और उन्होने अपने अंतर्मन से एक गीत रच डाला वो गीत था....

``वह इस घर का एक दिया था, विधी ने अनल स्फुलिंगों से उसके जीवन का वसनसिया था।``

1962 में चीन से युद्ध के पश्चात पूरा देश आहत था। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रदीपजी ने एक गीत लिखा था, जिसने उनको अमर बना दिया.....

`` ऐ मेरे वतन के लोगों, तुम खूब लगाओ नारा यह शुभ दिन है हम सब का, लहरा दो तिरंगा प्यारा. पर मत भूलो सीमा पर, वीरों ने है प्राण गवाएँ ....``

प्रदीपजी ने देशवासियों को स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए आव्हान किया। उन्होने फिल्मी गीत जरूर लिखे लेकिन उसमें देशप्रेम की अजस्त्र धारा को प्रवाहित करने में कामयाब रहे साहित्य समीक्षा के माणदण्डो के आधार पर कवि प्रदीप एक उच्च कोटि के साहित्यकार है। प्रदीपजी राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधी कवियों की

अग्रिम पंक्ति में अपना स्थान रखते है। भाषा की दृष्टि से कवि प्रदीप का स्थान अन्य गीतकारों से श्रेष्ठ है। समाज की बिगड़ती दशा को देखकर उनकी अंतरआत्मा ईश्वर से कहती है.....

``देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान कितना बदल गया इंसान``

आज चहुँओर यही हालात है। सामाजिकता की भावना से ओतप्रेत होकर विश्वबंधुत्व की भावना में उन्होंने लिखा था...

``इन्सान से इन्सान का हो भाईचारा, यही पैग़ाम हमारा, संसार में गूँजे समाता का इकतारा, यही पैग़ाम हमारा।``

सन् 1943 में आई फिल्म किस्मत में एक गीत था.....

``आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है, दूर हटो ... दूर हटो - ऐ दुनियावालो हिदोस्तान हमारा है।``

इस गीत के असर ने अंग्रेजी हुकुमत को इस कदर परेशान किया कि प्रदीप जी के खिलाफ वारंट निकाल दिया गाया। इससे बचने के लिए कवि प्रदीप को भूमिगत होना पड़ा। पाँच दशक के अपने पेशे में कवि प्रदीप ने 71 फिल्मों के लिए 1700 गीत लिखे।

पराधीन भारत के जाँबाज़ो को प्रदीप जी ने अपने गीत रूपी हथियार दिए। उनकी बेटी मितुल प्रदीप बताती हैं कि देशप्रेम के गीत लिखने का जज़्बा प्रदीप जी में उन्हीं दिनों से था जब वे बतौर छात्र ईलाहाबाद में पढ़ते थे। मितुल बताती है, ``पिताजी इलाहाबाद में पढ़ते थे, आनंद भवन के पीछे रहते थे, नेहरू जी को वे देखते थे जिसने उन्हें काफी प्रभावित किया। ये सब उनके ज़ेहन में इतना अंदर तक बैठ गया था कि जब लिखना शुरू किया तो, वीर रस की कविताएँ खूब लिखते थे।``

निदा फ़ाज़ली उन्हें बतौर कवि से अधिक एक गीतकार के रूप में ज्यादा मक़बूल मानते हैं। वे कहते है, ``प्रदीपजी ने बहुत ही अच्छे राष्ट्रीय गीत लिखे हैं। यूँ समझिए कि उन्होंने सिनेमा को ज़रिया बनाकर आम लोगों के लिए लिखा।`` वरिष्ठ पत्रकार जयप्रकाश चौकसे कवि प्रदीप के सादगी भरे जीवन से काफी प्रभावित थे, उन्हे याद करते हुए वे कहते हैं, ``उन्होने बहुत ज्यादा साहित्य का अध्ययन नही किया था वो जन्मजात कवि थे। उन्हें मैं देशी ठाठ का स्थानीय कवि

कहूँगा वे किसी राजनीतिक विचारधारा को नहीं मानते थे बौद्धिकता का जामा उनकी लेखनी पर नहीं था। जो सोचते थे वही लिखते थे, सरल थे, यही उनकी खासियत थी। प्रदीपजी एक संत पुरूष थे सीधे-सादे किसी भी प्रकार के दिखावे से दूर रहने वाले। कवि की मृत्यु 11 दिसंबर 1998 को हुई। अंत में उन के सम्बन्ध में इतना ही कहुँगा कि हिंदी फिल्म जगत में भावनापूर्ण साहित्यिक तथा उच्च स्तरीय गीत लिखकर कवि प्रदीप जी ने सच में कमाल किया। जो भले ही वे हमारे बीच शारिरिक रूप से नहीं है, परंतु अपनी अलौकिक रचनाओं के रूप में विश्व भर के हिंदी प्रेमियों, राष्ट्र प्रेमियों के ह्रदयों मे आज भी विराजमान है।`